''सन् 1940 में पंजाब की सामाजिक एवं आर्थिक दशा''

डॉ दर्शना देवी

सहायक प्राधिपिका (राजनीतिक शास्त्र), साउथ पुंवाइंट डिग्री कॉलेज,
रतनगढ़, बागडू, सोनीपत, हरियाणा, भारत

Accepted: 08.11.2022 **Published**: 01.12.2022

मुख्य शब्दः अर्थव्यवस्था, कृषि, जनसंख्या, व्यवसाय, उद्योग, सन्तोषजनक, समस्याए।

शोध आलेख सार

पंजाब की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि था। 80 प्रतिशत जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि था। जमीन उन क्षेत्रों में थी जहां पहले पानी नहीं लगता था अब उन क्षेत्रों में नई नहरें निकल गई थी तथा 85 प्रतिशत् औसत जमीन मालिक के पास जमीन की कमी नहीं थी बल्कि उनके खेत कई–2 जगह पर थे।कृषि मालिकों की भूमि का अलग–अलग जगह होने का मुख्य कारण उत्तराधिकारी के कारण बंटवारा था। किसानों को आड़तियों या दूसरे धनी लोगों से रूपये लेने पड़ते थे वे मन माना ब्याज वसूलते थे। 89 प्रतिशत् किसानों की, ऐसी दशा हो गई थी कि किसानों को अपनी कीमती जमीनें आड़तियों व कर्जदाताओं को गिरवी रखनी आरम्भ कर दी थी। कुछ ने बेचनी भी आरम्भ कर दी थी। पश्चिमी पंजाब के कुछ नगरों व शहरों के आर्थिक जीवन में हिन्दु वाणिज्यिक जाति प्रभुत्वशाली थी।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

प्रस्तावना

पंजाब की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि था। 80 प्रतिशत जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि था।[1] खाद्यान को प्रदेश की खपत के बाद व्यापार से बाहर ही नहीं भेजा जाता था बल्कि कपास व तेल वाली फसलों की उद्योग भी यही स्थापित हो चुके थे। पंजाब की उपजाऊ, जमीन, सस्ते मजदूर, फिर भी किसानो की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक नहीं थी। क्योंकि परम्परागत कृषि व्यवस्था व जमीन का कई जगह टुकडों में होने के कारण कृषि उपज उतनी नहीं हो पाती थी कि जिनती होनी चाहिये थी। सन् 1924 में एच कालवर्ट ने कृषि की समस्याओं का अध्ययन कर सन् 1925 में रिर्पोट प्रकाशित की थी। जो निम्न सारणी में दर्शाई गई है।[2]

स्वामित्व का आकार	मलिकों का प्रतिशत	जमींन प्रतिशत
1 एकड़ से नीचे	17.9	1.0
1–3 एकड़	22.5	4.4
3–5 एकड़	14.9	6.6
5–10 एकड़	18.0	15.1
10.15 एकड़	8.2	11.5
15–20 एकड़	4.3	8.4
20.25 एकड़	2.7	6.8
25–30 एकड़	4.8	20.4
50 एकड़ व अधिक	3.3	25.7

किसान औसत जमीन के मालिक 7–8 एकड़ के बीच ही थे। जमीन उन क्षेत्रों में थी जहां पहले पानी नहीं लगता था अब उन क्षेत्रों में नई नहरें निकल गई थी तथा 85 प्रतिशत् औसत जमीन मालिक के पास जमीन की कमी नहीं थी बल्कि उनके खेत कई–2 जगह पर थे। कृषि मालिकों की भूमि का अलग–अलग जगह होने का मुख्य कारण उत्तराधिकारी के कारण बंटवारा था।[3] कई जगह खेत होने के कारण किसान अपनी फसल की अच्छी तरह देखभाल नहीं कर पाते थे। सरकार के प्रयासों व कानून बनाने के बाद सन् 1937 से सन् 1939 तक भी केवल 87,000 एकड़ जमीन ही इकट्ठी की जा सकी थी।[4] इस प्रकार औसत किसान की उस समय आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। इस कारण किसानों को आड़तियों या दूसरे धनी लोगों से रूपये लेने पड़ते थे वे मन माना ब्याज वसूलते थे। 89 प्रतिशत् किसानों की ऐसी दशा हो गई थी कि, किसानों को अपनी कीमती जमीनें आड़तियों व कर्जदाताओं को गिरवी रखनी आरम्भ कर दी थी कुछ ने बेचनी भी आरम्भ कर दी थी।

तत्कालीन डेरा गाजीखान के उपायुक्त ने अपनी किताब में लिखा था कि सन् 1901 के कानून के अनुसार बिना कृषि भूमि वाला कोई व्यक्ति न तो जमीन खरीद सकता, न ही 20 वर्ष से ज्यादा के लिये गिरवी रख सकता था। व्यापारी व गैर कृषक लोगों ने दूसरे रास्ते निकाल लिये थे, और वे अपने जानकार कृषकों के नाम जमीन करवा लेते थे तथा कर्ज देने वाले उसका लाभ कमाते रहते थे। परन्तु इस समस्या के समाधान के लिये कई बार कानून बने। परन्तु प्रभावशाली कानून यूनियनिष्ठ पार्टी की सरकार के वजीर चौ. छोटू राम ने बनाकर पंजाब के सभी धर्मों के किसानों का इस समस्या से निदान दिलवाने का कार्य किया था।[5] पंजाब की आर्थिक व्यवस्था कृषि पर आधारित थी अधिकतर लोग गांव में रहते थे। पंजाब में दूसरे प्रदेशों की तरह औद्योगिक विकास नहीं हुआ था। सन् 1901–02 में पूरे प्रदेश में केवल 152 उद्योग थे तथा सन् 1932–33 तक उनकी संख्या बढ़कर केवल 673 ही हुई।[6] मुलतान, लाहौर, स्यालकोट, रावलपिंडी, लायलपुर, लुधियाना, गुरदासपुर, अमृतसर, अम्बाला उस समय पंजाब के मुख्य औद्योगिक केन्द्र थे। व्यापार का मुख्य साधन यातायात के लिये रेल थी। आंतरिक व्यापार के मुख्य केन्द्र उस समय मुलतान, लाहौर, लायलपुर, अमृतसर, लुधियाना, कैथल, सिरसा व फाजिलका थे।

पंजाब में मुख्य रूप से कृषक जातियों में जाट थे। जो मुख्यतः हिन्दु, मुस्लिम और सिक्ख तीनों सम्प्रदायों में पाये जाते थे। वे कृषि के साथ पुलिस व सेना में भी कार्यरत थे। इनके अलावा अहीर हिन्दु और मुस्लिम दोनों में तथा अवन एवं मेयों केवल मुस्लिम मे थे। राठी और कोली जातियां जो कृषक कार्य करती थी। सिर्फ हिन्दुओं में अच्छी अवस्था में थी। इनके अलावा सैनी केवल अम्बाला और जालन्धर डीविजन के कृषक थे। राजपूत पंजाब में भूस्वामित्व जाति थी जो पंजाब में कही कम कहीं पर ज्यादा थी यह प्रमुख कृषक जातियों में से एक थी, जो हिन्दु, मुस्लिम और सिक्ख तीनों सम्प्रदायों में पाए जाते थे। हिन्दु राजपूत प्रान्त के सभी भागों में कम या ज्यादा संख्या में विद्यमान थे जबकि कागड़ा और होशियारपुर में इनकी संख्या ज्यादा थी। इसके अतिरिक्त मुस्लिम राजपूत केन्द्रीय पंजाब के पहाडी क्षेत्र शिमला और कागडा को छोडकर सारे पंजाब के जालन्धर और लाहौर डीविजन के अतिरिक्त पश्चिमी पंजाब के कुछ जिलों में प्रभुत्वशाली थे।पंजाब में मुस्लिम राजपूत हिन्दु और सिखों से कई गुणा ज्यादा थे। इस प्रकार से मुस्लिम राजपूत आर्थिक रूप से अधिक प्रभावशाली थे जो सिक्ख और हिन्दु राजपूतों में सामाजिक और आर्थिक स्तर पर ईर्ष्या की भावना पैदा करती थी। हिन्दु और सिक्ख राजपूतों में हिन्दु राजपूत ज्यादा शक्तिशाली थे। मुस्लिम राजपूत हिन्दु रीति–रिवाजों का पालन करते हुए शादी–विवाह के अवसर पर मन्दिर के पुजारी को बुलाते थे। परन्तु दुर्भाग्य से हिन्दु और मुस्लिम में झटका और हलाल के प्रश्न पर हमेशा ही तनाव रहता था। साथ ही उनके राजनीतिक विचारों में भिन्नता थी।[7]

उद्योग और यातायात के क्षेत्र मे हिन्दु राजपूत की संख्या मुस्लिम और सिक्ख राजपूत की तुलनात्मक में ज्यादा थी। जब कि कारीगर और अन्य कार्य करने वाले व्यक्तियों की संख्या में मुस्लिम की संख्या हिन्दु और सिक्खों की संख्या से ज्यादा थी। यातायात के क्षेत्र में संख्या की दृष्टि से मुस्लिम राजपूत अधिक थे और सरकारी सेवाओं में तथा डाक्टर, अध्यापक और वकीलों की संख्या मे भी मुस्लिम, हिन्दु, और सिक्खों राजपूतों से ज्यादा थी। राजपूतों की यह स्थिति तीनों राजपूतों में आपसी प्रतिस्पर्धा पैदा करती थी और उनमें आपसी द्वेष और ईर्ष्या की भावना पैदा होती गई, साथ हबी अपनी सामाजिक और राजनीतिक पहचान बनाने के लिए संघर्ष करते रहते थे।

जाट प्रान्त के कृषक समुह में महत्वपूर्ण स्थान व सम्मान रखते थे। यह समुह मुख्य रूप से तीन मुख्य धार्मिक समूहों मे बंटा था। हिन्दु, मुस्लिम और सिक्ख मुस्लिम जाट मुख्यतः सीमान्त के पश्चिमी जिलों में थे। जबकि सिक्ख जाट केन्द्रीय पंजाब मे, तो हिन्दु जाट दक्षिणी पूर्वी पंजाब मे अधिक संख्या में थे। अगर जीविका पार्जनकर्ता व काम पर निर्भर रहने वाले और भूमि को ठेके पर देने वालों के रूप में देखें तो मुस्लिम जाट प्रान्त के पश्चिमी क्षेत्रों रावलपींडी और मुल्तान के सभी जिलों और केन्द्रीय प्रान्त में लाहौर गुजरात, लायलपुर और झंग जिलों में और पूर्वी पंजाब के कुछ जिलों में प्रभावशाली रूप में था। दूसरे शब्दों में इन स्थानों पर मुस्लिम जाट आर्थिक रूप से ज्यादा शक्तिशाली थे।

सिक्ख जाट भी केन्द्रीय प्रान्त के जालान्धर डीविजन और लाहौर डीविजन मे गुजरात, लायलपुर व झंग आदि जिलों में जीविकापार्जन व कार्य पर निर्भर करने वालों की संख्या के रूप में अधिक थे। जबकि वे कुछ स्थानों को छोड़कर मुस्लिम और हिन्दु जाटों के समान भूमि के ठेकेदार नहीं थे। उद्योग और यातायात के क्षेत्र में मुस्लिम जाट अग्रणी थे जबकि प्रशासनिक सेवा में सिक्ख जाट, मुस्लिम और हिन्दु जाट की अपेक्षा ज्यादा संख्या में थे। इसके अलावा डाक्टर, वकील और अध्यापक जैसे व्यवसायें के अपनाने वालों की संख्या की मुस्लिम जाट, हिन्दु और सिक्ख जाट की तुलना में अधिक थे। हिन्दुओं जाटों की सामाजिक स्थिति अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग थी। जैसे रोहतक व हिसार जिले की हांसी तहसील के हिन्दू जाटों की सामाजिक स्थिति सिरसा व भिवानी तहसील के जाटों की अपेक्षा ऊंची थी। अर्थात् हिसार रोहतक के जाटों की स्थिति समाज में दूसरी हिन्दु जातियों, ब्रह्माणों , राजपूतों और बनियों के समान थी। परन्तु अन्य क्षेत्रों के जाटों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने व अन्य कारणों से अच्छी नहीं थी। पंजाब में जाट कुशल कृषक थे।

सिक्ख जाट अन्य जाटों की तुलना में जमीनी रूप से ज्यादा अमीर थे। क्योंकि ये इच्छावादी संयमी और विकासशील दृष्टिकोण से नए तरीकों को अपनाने वाले थे। हिन्दु और सिक्ख जाट के बीच सम्बन्ध अधिकतर समान थे जबकि मुस्लिम जाटों में भिन्नताएं स्पष्ट तौर पर उनमें खान–पान की आदतों (विशेषकर गोमांस) के कारण अलग थी और विवाह आदि सम्बन्ध तीनों सम्प्रदाय अपने ही सम्प्रदाय में करते थे जो उनकी जाति और सम्प्रदाय की पहचान का स्पष्ट लक्ष्य था। इसलिए विभिन्न समूहों के जाटों की स्थिति उनके भोगौलिक स्थिति पर निर्भर करती थी। हिन्दू व सिक्ख जाटों मे विवाह सम्बंध थे।

पंजाब में कम्बोज भी मुख्य कृषक जाति के रूप में थी। जो हिन्दु, मुस्लिम और सिक्ख तीनों सम्प्रदायों में पाई जाती थी। हिन्दु कम्बोज केन्द्रीय पंजाब के पहाड़ी क्षेत्रों में जिसमें शिमला, कगड़ा जिलों को छोड़कर पंजाब के बाकी सभी जगह विद्यमान थे। इनकी संख्या कम होने के बावजूद भी जीविकापार्जन व कार्य करने पर निर्भर रहकर कमाने वालों में अग्रणी थे। साथ ही भूमि को ठेके पर देकर आमदन करने वालों की संख्या में सन् 1931 में हिन्दु कम्बोज 225 थे वही मुस्लिम कम्बोज 157 और सिक्ख कम्बोज 30 थे। अतः हिन्दु कम्बोज पंजाब मे भूस्वामी थे। उद्योगों में (मालिक, मनेजर और क्लर्क) और यातायात में (मालिक, मनेजर) आदि में भी मुस्लिम कम्बोज की संख्या ज्यादा थी जिसमें पश्चिमी पंजाब के रावलपींड़ी ओर मुल्मान डीविजन आते थे। प्रथम श्रेणी की सेवाओं मे हिन्दु और सिक्ख कम्बोज की संख्या शून्य थी।[8]

गुज्जर भी प्रान्त में कृषक के रूप मे जाने जाते थे। इसके साथ वे पशुपालन का कार्य भी करते थे। इस समय सिक्ख गुज्जर भूमि ठेकेदारों के रूप में संख्यात्मक रूप से जालन्धर में प्रभुत्वशाली नजर आते है जहां सिक्ख गुजर की संख्या 971 थी वही हिन्दु और मुस्लिम गुज्जर ठेकेदारों की संख्या 100 और 734 थी। सिक्ख गुज्जर जालन्धर डीविजन में आर्थिक रूप से प्रभावशाली थे।

इन सब के अतिरिक्त पंजाब में दूसरी महत्वपूर्ण कृषक जातियों के रूप में पठान, मुगल, मेयों, कुरेशी, सैयद, शेख और अहीर आदि भी थे। पठन प्रान्त के अटोक और मियावाली जिलों में प्रभुत्वशाली थे। मेयों, राजपूताना की सीमा पर गुड़गांव और फिरोजपुर झिरंका में रहते थे। परन्तु ये आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से पिछड़े हुए थे। हिन्दू केन्द्रीय पंजाब के उद्योग और यातायात के क्षेत्र में अच्छी संख्या में थे। हिन्दु और सिक्ख सैनी की उद्योग और यातायात के क्षेत्र में संख्या ज्यादा थी। इन कृषक जातियों के अतिरिक्त समाज के भिन्न–भिन्न भागों से कला और शिल्प से संबधित विभिन्न जातीय समूह की विशेषताओं और सामाजिक स्तर की आकांक्षा के रूप में भारत के मिश्रित परम्परागत ढ़ाचे में नये व्यवसायी आयें भी जिनमें से कुछ कार्य शिल्प सम्बन्धी जातियां जैसे कुम्हार, नाई, लोहार और जुलाहा आदि थे। पंजाब में व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्रों में हिन्दुओं का बोलबाला था। हिन्दु व्यापारी वर्ग तीन मुख्य व्यापारिक समुहों खत्री, अरोड़ा और बनिया में बंटे थे। वही मुस्लिम में शेख व खोजा मुख्य व्यापारिक जातियां थी। खत्री क्षत्रिय के समान वीर माने जाते थे। समाज में इनका बहुत महत्व होने के साथ–साथ ये सामाजिक बन्धनों से मुक्त थे। खत्री हिन्दु और सिक्ख दोनों धर्मों में थे। इनमें भी संख्यात्मक रूप से हिन्दु खत्री लगभग सारे पंजाब में फैले हुए थे। पूर्वी पंजाब में अम्बाला डीविजन में सिक्ख खत्री अधिक थे केन्द्रीय पंजाब के पहाडी क्षेत्रों में हिन्दु खत्री तथा जालन्धर डीविजन मे सिक्ख खत्री अधिक संख्या में थे। इनके अलावा पश्चिमी पंजाब के कुछ जिलों में भी थे। प्रशासनिक सेवाओं में हिन्दु खत्री का बोलबाला था जबकि सिक्ख खतरी कम संख्या में थे। इसके अलावा वकील, अध्यापक और डाक्टर की संख्या में हिन्दु खत्री, सिक्ख खत्री से लगभग आठ गुना अधिक थे।[9]

खत्री अपने सामाजिक स्तर के रूप में तीन मुख्य समूहों में विभाजित थे– 1 बांटी 2 भून्जी 3 सरिन। इन तीनों समूहों के आपसी सामाजिक सम्बन्ध भिन्न–2 थे जो इनको एक दूसरे से सामाजिक स्तर पर श्रेष्ठ या उच्च प्रदर्शित करते थे। इस परम्परागत सामाजिक विभाजन के अतिक्ति पंजाब में खत्री चार पवित्र वर्गों में भी विभाजित थे। 1 बेदी 2 सोढ़ी 3 तेहरान और 4 भल्ला। चारों वर्ग विभिन्न सिक्ख गुरूओं के जन्म के द्वारा पवित्र बनाये गये थे। हुआ परन्तु इनमें अधिकतर गुरू हिन्दु थे। परन्तु इस पैतृक पवित्रता ने इन वर्गो की सामाजिक स्तर की जातिय पदसोपान में परिवर्तन नहीं किया। चाहे खत्री अरोडा और भाटिया के समान, व्यापारिक जाति रहीं। परन्तु सामाजिक पदसोपान में वे इनसे उच्च थे। खत्री प्रशासनिक सेवाओं मे अरोड़ा और बनियों तथा शेख की तुलना में ज्यादा संख्या में थे। शिक्षा में भी खत्रीयों की अच्छी स्थिति थी। इसी कारण वे सरकारी नौकरियों में ज्यादा संख्या में थे। परन्तु वे सैनिक सेवा में बहुत कम जाते थे। और समाज में सामाजिक और आर्थिक रूप में अन्य से उच्च स्थान पर थे।

अरोड़ा भी पंजाब में मुख्य व्यापारिक वर्ग के रूप में थे और अधिकतर संख्या में हिन्दु थे जो केन्द्रीय पंजाब के पठानी इलाकों और जालन्धर डीविजन के कुछ जिलों के अतिरिक्त पश्चिमी पंजाब में

रावलपींडी, मुल्तान और लाहोर डीविजन के कई जिलों में फैले हुये थे। अरोड़ा भी खत्री के समान ही सामाजिक स्तर रखते थे। कुछ खत्रियों ने जिन्होंने इस्लाम को स्वीकार कर लिया था। खोजा के नाम से जाने जाते थे। परन्तु उनकी संख्या बहुत कम थी। अरोड़ा व्यापारिक वर्ग में केवल हिन्दु और सिक्ख थे। उद्योगों के क्षेत्र में अरोड़ा, बनिया या अग्रवाल से अधिक संख्या में थे। इसके अलावा मुस्लिम शेख व्यापारिक वर्ग की तुलना में अरोड़ा औद्योगिक क्षेत्र में संख्यात्मक रूप से (मालिक और मनेजर) अधिक थे। जबकि उद्योगों के कार्य में शेख व्यापारिक वर्ग अधिक प्रभुत्वशाली थ। यातायात के क्षेत्र में भी खत्री के बाद अरोड़ा का स्थान था। अग्रवाल और शेख संख्यात्मक रूप से अरोड़ा से कम थे। प्रशासनिक सेवाओं में भी अरोड़ा का स्थान मुस्लिम शेख के समान ही था। अध्यापक, वकील और डाक्टर की संख्या में अरोड़ा अच्छी संख्या में थी।[10]

अरोड़ों का महत्वपूर्ण व्यवसाय व्यापार और सूदखोरी था। इसके अलावा वे दूसरे कार्य भी करते थे। वास्तव में अरोडा का राजनीतिक क्षेत्र को छोड़कर के प्रत्येक क्षेत्र में योगदान था। अरोड़ा अपने कमजोर शारीरिक डीलडौल के बावजूद वह सक्रीय और उद्यमी तथ कपटी थे। इस कारण से समाज में इनका स्थान महत्वपूर्ण था। इसके बाद व्यापरिक वर्ग में पंजाब में शेख आते थे। जो मुस्लिम सम्प्रदाय से थे। ये पंजाब में केन्द्रीय पंजाब जिसमें शिमला की पहाड़ी क्षेत्र और कागड़ा जिले को छोड़कर सभी क्षेत्र मे पाए जाते थे। उद्योग और यातायात के क्षेत्र में इनकी स्थिति खतरी और अरोड़ो के बाद आती थी। इसके साथ ही प्रशासनिक सेवओं में इनका स्थान खतरी के बाद आता था। इस कारण यह वर्ग अन्य वर्ग से प्रतिस्पर्धा करता नजर आता है और दूसरे वर्गों से सामाजिक और आर्थिक स्तर पर उच्च बनने के प्रयास में था। क्योंकि यह एक व्यापारिक वर्ग था जो मुस्लिम था, शेष हिन्दु थे।

इन कृषक वर्गों या जातियों के अतिरिक्त समाज के भिन्न–2 भागों से कलां और शिल्प से सम्बन्धित विभिन्न जातियों समूहों की विशेषताओं और समाजिक स्तर की आकांक्षा के रूप में भारत के मिश्रित परम्परागत ढ़ाचे में नए व्यवसायी आयें। जिनमें से कुछ कार्य या शिल्प सम्बन्धी जातियां जैसे कुम्हार, नाई, लाहोर और जुलाहा आदि थे। केन्दीय पंजाब के हिस्सों मे साहूकारी व्यवसाय निश्चित रूप से सामान्य था। लाहौर अमृतसर और होशियारपुर में इसकी ताकत सामर्थय भी कम नहीं थी और कृषि व सहकारिता में पहुंच गई थी। मुल्तान मं इसकी पकड पहले के समान मजबूत थी। जहां इसका एक मजबूत प्रभाव व प्रभुत्व था। कृषक साहुकारी के अलावा पंजाब भी अधिकतर साहुकारी तीन जातियों के बनिया, खत्री और अरोडा फैले हुए थे, भिन्न भागों में थे। सतलुज के दक्षिण के बनिये और केन्द्रीय पंजाब में खत्री और पूर्ण पश्चिम में अरोड़ा फैले हुए थे। खत्री इनमें भिन्न स्वभाव के थे। वे जाटों के समान महान योद्धा जातियों से सम्बन्धित में सम्मिलित थे। यह जाति पंजाब में (बहुत अधिक प्रभावी) प्रशासनिक और व्यापार में बहुत अधिक प्रभावी थी।

उत्तर में यह प्रायः किसान और सिपाही होता था। इन तीनों सहुकारी जातियों में सबसे अच्छे थे तो अरोड़ा मिराड़ सबसे बुरे थे। क्योंकि अरोड़ा

साहुकार वर्ग द्वारा कृषक वर्ग को कर्ज ऊँची ब्याज दरों पर देते थे और उनकी वसूली के समय वे अपनी शर्म को एक तरफ रखकर धृष्टतापूर्वक व्यवहार करते थे। साथ ही एक अग्रीम जमानत भी रखते थे जिसके तहत अगर वह कर्ज नहीं दे पाता, तो उसकी पैतृक उपजाऊ जमीन और उत्पादन उसको बेचने पड़ते थे। और वह बन्धक बनकर रह जाता था। इस प्रकार का कठोर या कठिन व्यवसायिक योग्यता का गुण कृषक वर्ग में साहूकार या अरोडा के विरूद्ध डर, घृणा और तिरष्कार को बनाती थी। परन्तु यह व्याख्या उन दिनों से सम्बन्धित थी जिन दिनों इन साहूकारों या अरोड़ा की ताकत अपने चरम पर थी।[11]

मुसलमान जो शिक्षा व्यवसाय और व्यापार के क्षेत्र में पिछडे हुये थे, ग्रामीण जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा थे और प्राथमिक रूप से कृषक थे जोकि हिन्दू बनिया के द्वारा दुख भोग रहे थे। अग्रेजों की फुट डालों और शासन करो की नीति ने जातीय विभाजन को बढावा दिया। शहरी व्यापारी जातियों में अग्रवाल, अरोड़ा, और खत्री मुख्य थे और खेती करने वालों में मुख्य सम्प्रदाय हिन्दु, मुस्लिम और सिक्ख जाति के थे यद्यपि 54 प्रतिशत जनसंख्या मुसलमानों की थी। यहाँ पर मुस्लिम जमीदारों का एक वर्ग निवास करता था परन्तु बहुमत छोटे–छोटे किसानों तथा किराये पर जमीन लेने वालों का था। ज्यादातर मुस्लमान शहरों तथा कस्बों में दस्तकारी का कार्य करने के कारण गरीबी का जीवन व्यतीत करते थे। कुछ मध्यम वर्गीय मुस्लिम ही पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करके ऊँची–ऊँची नौकरियों पर आसीन थे। पंजाब के लोगों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का प्रान्त की राजनीति पर बडा गम्भीर प्रभाव पड़ा। पश्चिम पंजाब के मुस्लिम भूस्वामी, सिक्ख अमीर वर्ग, केन्द्रीय पंजाब के अमीर शहरी हिन्दू और जागरूक हिन्दु तथा पूर्वी पंजाब के हिन्दू जाटो की जातिय जागरूकता ने प्रान्त की राजनीति में बहुत ही प्रभुत्वशाली भूमिका अदा करती थी।[12]

निष्कर्ष

पश्चिमी पंजाब के कुछ नगरों या शहरे के आर्थिक जीवन में हिन्दु वाणिज्यिक जाति प्रभुत्वशाली थी। हिसार की हांसी तहसील व रोहतक के हिन्दू जाट सभी क्षेत्रों में प्रभावशाली थे। वास्तव में सम्पूर्ण ब्रिटिश पंजाब बैंको की बहुतायता, फैक्ट्री, दुकाने और वाणिज्यक संस्थान हिन्दुओं के हाथों में थे। आर्थिक मजबूती के बावजूद शहरी हिन्दु हमेशा असुरक्षित महसूस करते थे। क्योंकि वे पंजाब के कुछ सीमान्त जिलों में जनसंख्या में बहुत कम थे और प्रायः कबीलाई लोगों से पीड़ित रहते थे। पूर्वी और केन्द्रीय जिलों में हिन्दु समुदाय की निम्न जातियों के सदस्यों द्वारा सिक्ख धर्म में चले जाना उनके लिए एक चिन्ता का अनुभव बन गई थी। इस प्रकार विभिन्न कारणों से सन् 1940 तक पंजाब के तीनों धर्मों के लोगों मे सामाजिक स्तर में बहुत बडा परिवर्तन आ चुका था। मुख्य रूप से मुसलमानों के दृष्टिकोण में। यह परिवर्तन बडा ही महत्वपूर्ण था। अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष निकला है कि सन् 1940 तक पंजाब की जनता की सामाजिक–आर्थित स्थिति ने पंजाब की राजनीतिक को बहुत प्रभावित किया।

संदर्भ

1. M Afzal Hussan – Agriculture in Punjab, Punjab past and Present, PP-141-171
2. H Calvert – The size and Distribution of Agricultrue Holding in Punjab, P-3
3. Punjab Govt.: Bullenting of Jont Development Board, P-13
4. M.L. Darling- The Punjab peasant in prosperity and debit, P-91
5. Madan Gopal – Sir Chotu ram : Poltitcal Biography P-91
6. Amerjeet Sing- Punjab Devided : Politiec of the muslimleauge & partition P-18 (1935-1947)
7. S.C Sharma – Punjab : The crucial Decade, P-107
8. The censues of India- Pujnab 1931 XVII Part-1 PP-220-223
9. Punjab Agriculture Act., 1938 Sction – 3
10. Punjab Govt. The land of five Revers, P-325
11. Census of Punjab (India) in 1931
12. K.L. Tutaga- Sikh Politcs, P-247